जैन धर्म के प्रादुर्भाव की परिस्थितियों को समझने के लिए हमें छठी शताब्दी ईसा पूर्व के भारत के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवेश को देखना पड़ता है। उस समय की अनेक परिस्थितियों ने जैन धर्म के उदय का मार्ग प्रशस्त किया। मुख्य परिस्थितियाँ निम्नलिखित हैं —

---

1. वैदिक धर्म की जटिलता और अनुष्ठानवाद से असंतोष

छठी शताब्दी ईसा पूर्व तक वैदिक धर्म अत्यंत कर्मकांडों, यज्ञों और बलि-प्रथाओं से ग्रस्त हो गया था।

यज्ञों में पशु-बलि दी जाती थी, जिससे समाज के एक बड़े हिस्से में विरोध उत्पन्न हुआ।

ब्राह्मणों का एकाधिकार और आडंबरपूर्ण धर्माचार जनसाधारण को असंतुष्ट करने लगे।

ऐसे में लोग एक सरल, नैतिक और तर्कसंगत धर्म की खोज में थे — जैन धर्म ने यही विकल्प प्रस्तुत किया।

---

2. सामाजिक असमानता और ब्राह्मणवादी व्यवस्था का विरोध

वर्णव्यवस्था ने समाज को ऊँच-नीच में बाँट दिया था।

श्रमण आंदोलन, जिसमें जैन, बौद्ध और आजीवक जैसे संप्रदाय आए, उसी सामाजिक असमानता के विरुद्ध प्रतिक्रिया थे।

जैन धर्म ने सभी जीवों की समानता और अहिंसा का सिद्धांत दिया — जिससे यह सामान्य जन में लोकप्रिय हुआ।

---

3. आर्थिक परिवर्तन

उस समय भारत में शहरों का विकास, व्यापार और उद्योगों का विस्तार हो रहा था।

व्यापारी वर्ग पशु-बलि और भारी यज्ञों से असंतुष्ट था।

जैन धर्म का अहिंसा और अपरिग्रह का सिद्धांत व्यापारियों को व्यावहारिक और नैतिक रूप से आकर्षक लगा।

इसीलिए जैन धर्म को प्रारंभ से ही व्यापारी वर्ग का समर्थन मिला।

---

4. तप, संयम और आत्मशुद्धि की प्रवृत्ति

उस समय विभिन्न विचारधाराएँ आत्म-नियंत्रण और तपस्या पर बल दे रही थीं।

जैन धर्म ने तप, संयम, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह जैसे सिद्धांतों को अपनाया, जो उस युग की आध्यात्मिक प्रवृत्ति के अनुरूप थे।

---

5. राजनीतिक स्थिरता और धार्मिक स्वतंत्रता

मगध और वैशाली जैसे गणराज्यों में धार्मिक स्वतंत्रता थी।

इन क्षेत्रों में महावीर स्वामी का जन्म और उपदेश हुआ।

स्थानीय शासकों का संरक्षण (जैसे लिच्छवि और मगध के राजा बिंबिसार) ने जैन धर्म के प्रसार में सहयोग दिया।

---

6. बौद्ध धर्म के समानांतर सुधार आंदोलन

उसी काल में बुद्ध ने भी अपने उपदेश दिए।

दोनों धर्म एक ही सुधारवादी लहर के परिणाम थे — जहाँ समाज पुराने धार्मिक ढाँचे से निकलकर नैतिकता, करुणा और आत्म-संयम की ओर बढ़ रहा था।

निष्कर्ष

> इस प्रकार जैन धर्म का प्रादुर्भाव केवल धार्मिक सुधार नहीं था, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और बौद्धिक परिवर्तन की एक स्वाभाविक परिणति थी।

यह धर्म उस युग की असंतोषजनक व्यवस्था के प्रति प्रतिक्रिया था और अहिंसा, सत्य एवं आत्मसंयम जैसे सार्वभौमिक मूल्यों पर आधारित एक नई दिशा प्रस्तुत करता है।